HISTORY

B.A.PART-II (Hons)

Paper-III [History of India (1200-1526)AD]

Unit-I, (Raziya Sultan)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 54

"रजिया सुलतान (1236 से 1240)"

इल्तुतमिश ने अपनी पुत्री रजिया को अपना उत्तराधिकारी बनाया था, पर उसकी मृत्यु के बाद उसके बड़े पुत्र रुक्नुद्दीन फिरोज को दिल्ली की गद्दी पर बैठाया गया । वह विलासी प्रवृत्ति का होने के कारण शासन के कार्यों में रुचि नहीं लेता था और शासन की बागडोर उसकी मां शाह तुर्कान के हाथों में थी। फिरोज एवं उसकी मां शाह तुर्कान के अत्याचारों से चारों तरफ विद्रोह फूट पड़ा। विद्रोह को दबाने के लिए जैसे ही फिरोज राजधानी से बाहर गया, रजिया ने लाल वस्त्र धारण कर (लाल वस्त्र पहन कर ही न्याय की मांग की जाती थी) जनता के

Dr. Guddy Kumari (A.N.D College)

सामने उपस्थित होकर शाह तुर्कान के विरुद्ध सहायता मांगी । जनता ने उत्साह के साथ रजिया को फिरोज के दिल्ली में घुसने के पूर्व ही दिल्ली के तख्त पर बैठा दिया । रुक्नुद्दीन फिरोज को कैद कर उसकी हत्या कर दी गई।

रजिया सुलतान दिल्ली की जनता तथा अमीरों के सहयोग से राज्य सिंहासन पर बैठी और चूँकि रजिया को सुल्तान बनाने का अधिकार सिर्फ दिल्ली के अमीरों को मिला इसलिए अन्य तुर्क अमीर जैसे निजामुलमुल्क जुनैदी, मलिक अलाउद्दीन जानी, मलिक सैफुद्दीन कूची, मलिक ईनुद्दीन कबीर खाँ अयाजा एवं मलिक ईजुद्दीन सलारी आदि रजिया के प्रबल विरोधी बन गये । रजिया ने इजुद्दीन सलारी एवं इजुद्दीन कबीर खान को अपनी तरफ करके विद्रोह को सफलता से कुचल दिया ।

सुल्तान की शक्ति एवं सम्मान में वृद्धि करने के लिए रजिया ने अपने व्यवहार मे परिवर्तन किया । वह पर्दा प्रथा को त्याग कर पुरुषों की तरह कुबा (कोट) एवं कुलाह' (टोपी) पहन कर राजदरबार में खुले मुँह से जाने लगी। उसने अपने कुछ विश्वासपात्र सरदारों को उच्च पदों पर नियुक्त किया । इख्तियारुद्दीन ऐतगीन को 'अमीरे हाजिब', मलिक जमालुद्दीन

Dr.Guddy Kumari (A.N.D.College)

याकूत (अबीसीनियन) को अमीर-ए-आखूर', मलिक इजुद्दीन कबीर खान को लाहौर का अक्तदार और इख्तियारुद्दीन अल्तूनिया को तबर हिंद (बठिंडा) का अक्तादार नियुक्त किया गया।

लगभग 1240 में तवर हिंद के अक्तदार अल्तूनिया द्वारा किये गये विद्रोह को कुचलने के लिए रजिया को तबरहिंद की ओर जाना पड़ा । तुर्क अमीरों ने याकूत की हत्या कर रजिया को बंदी बना लिया तथा दिल्ली के सिंहासन पर इल्तुतमिश के तीसरे पुत्र मुइजुद्दीन बहरामशाह को बैठाया गया । तबर हिंद के अक्तदार अल्तूनिया से विवाह कर रजिया ने पुनः दिल्ली के तख्त को प्राप्त करने का प्रयत्न किया, पर बहराम शाह ने कैथल के समीप दोनों की हत्या कुछ हिन्दू डाकुओं द्वारा करा दी ।

रजिया दिल्ली सल्तनत की प्रथम तुर्क महिला शासिका थी । इसने अपने विरोधी गुलाम सरदारों पर पूर्ण नियंत्रण रखा । रजिया की असफलता के कारणों में कुछ इतिहासकारों का मत है कि ' रजिया का स्त्री होना ही उसकी असफलता का कारण था, पर कुछ आधुनिक इतिहासकार इस मत से सहमत न होकर

Dr.Suddy Kumari (A.N.D College)

गुलाम तुर्क सरदारों की महत्वाकांक्षा को ही रजिया की असफलता का कारण मानते हैं ।

Thanks.

Dr.Guddy Kumari (A.N.D College)